ORIGINAL RESEARCH PAPER

History

KEY WORDS:.

''गुर्जर'' शब्द व्युत्पत्ति एवं विकास

डॉ0 के0के0 शर्मा एसोसिएट प्रोफेसर एम0एम0 (पी0जी0) कॉलिज, मोदीनगर

दीपक कुमार शोधार्थी (इतिहास विभाग) एम0एम0 (पी0जी0) कॉलिज, मोदीनगर

भारत की शास्त्रीय परम्परा लगभग चार हजार वर्ष पुरानी है। वैदिक युगीन ब्राह्मण ग्रन्थों, उपनिषदों, पुराणों एवं संस्कृत साहित्य से लेकर इसी क्रम में आगे चलकर जुड़ जाने वाली पाली व प्राकृत में रचित बौद्ध साहित्य एवं अर्धमागधी में रचित जैन साहित्य की परम्पराओं से परिलक्षित होता है कि इन सभी में जिन विश्वासों एवं आचार–विचारों के रूपों का वर्णन हुआ है, वे हमारे देश में आज भी विद्यमान हैं। उनमे भारतीय जाति–प्रणाली इतनी जटिल व आश्चर्यजनक संस्था रही है कि उसकी उत्पत्ति के सन्दर्भ में निश्चयपूर्वक कहा जाना कठिन जान पड़ता है। मजूमदार का कथन है–''जाति संरचना की जटिल प्रकृति इस तथ्य से प्रमाणित है कि सामाजिक व्यवस्था के इतिहास और प्रकार्य के सम्बन्ध में एक शताब्दी के परिश्रम व सावधानीपूर्ण किये गये अनुसंधानों के पश्चात् भी हम निश्चित रूप से उन परिस्थितियों की व्याख्या नहीं कर पाये हैं, जिन्होंने इस विशिष्ट व्यवस्था के निर्माण और विकास में योगदान किया है।[1] फिर भी प्रचानी परम्पराओं के अध्ययन के आधार पर, पूर्व–मध्यकाल की प्रधान राजशक्ति गुर्जरों की व्युत्पत्ति को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

गुर्जर शब्द, जिसकी व्युत्पत्ति संस्कृत भाषा से है; का प्रयोग अनेक स्थानों पर हुआ है। किसी देश के ऐसे साहसी व्यक्तियों को, जो शत्रुओं के आक्रमणों को नष्ट करने में सक्षम हैं; 'गुर्जर' कहा जाता हैं। संस्कृत भाषा के प्रसिद्ध कोष–'शब्द कल्पद्रम' से यह पता चलता है कि जिस समय गुर्जर देश प्रसिद्धि में आया उस समय गुर्जर नाम की एक ऐसी क्षत्रिय जाति बसती थी जो निरन्तर शत्रु के द्वारा किये गये आक्रमण को साहस व बलपूर्वक रोककर देश की रक्षा करने में समर्थ थी।[2]

प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता पं0 छोटेलाल शर्मा ने गुर्जर शब्द के बारे में लिखा है कि गुर्जर शब्द संस्कृत के समानार्थक शब्द 'गुरूत्तर' से बना है। गुरूत्तर महान व अतिशक्तिशाली को कहा जाता है। गुर्जर शब्द क्षत्रिय के लिए प्रयुक्त 'गुरूत्तर' शब्द से बिगड़ कर बना है। जब इस जाति (गुर्जर) के क्षत्रिय, दुश्मनों से बड़ी–बड़ी लड़ाइयाँ लड़ते थे तो इनको गुरूत्तर यानी महान बलवान और शक्तिशाली कहा जाता था। प्राचीन ग्रन्थों में गुरूत्तर शब्द क्षत्रियों के लिए विशेषण के रूप में अनेक स्थान पर आया है।[3] इस सन्दर्भ में बाल्मीकि रामायण का उल्लेख करना उचित होगा, जिसमें लिखा है–

''गतो दशरथः स्वर्गयी गुरूत्तरो गुरू''

अर्थात् प्रौढ़ राजा दशरथ जो हम क्षत्रियों में गुरूत्तर यानी महान व शक्तिशाली थे; स्वर्ग सिधार गये हैं। अतः इस कथन व साक्ष्यों से गुर्जर शब्द का अर्थ पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है।

संस्कृत में पाणिनि के सूत्रानुसार 'त्रा' का अर्थ होता है 'के द्वारा सुरक्षा'। यहाँ पर 'त्रा' संक्षिप्त है। अतः गुर्जरत्रा (गुजरात) का अर्थ हुआ; एक देश गुर्जरों द्वारा सुरक्षित अथवा गुर्जरों द्वारा एक प्रदेश या देश की सुरक्षा।

इतिहास में 'गुर्जर' व 'गुर्जरत्रा' इन दो नामों से यह स्पष्ट है कि प्राचीन काल में क्षत्रियों के एक वर्ग ने देश के पश्चिमी सिरे से आक्रमण करने वाले शत्रुओ का नाश किया; इसलिए क्षत्रियों के उस वर्ग को लोगों ने गुर्जर नाम की उपाधि प्रदान की। इतिहास इसका उदाहरण कि जब इस क्षेत्र के क्षत्रिय सर्वशक्तिशाली हो गये तब उन्होंने गुर्जर, गुर्जेश्वर, गुर्जर–सेनानी, गुर्जरेन्द्रा और गुर्जरनाथ आदि उपाधियाँ धारण कीं।[4]

कुछ पुराणों में क्षत्रिय वर्ग 'गुशावर' (शत्रुओं को पराजित करने वाला) नाम से वर्णित हुआ है। इस शब्द का प्राकृत स्वरूप 'गुर्शार' = गुर्सर है। प्राकृत के साथ संस्कृत एक विशाल भाषा है। इसलिए लोगों द्वारा चाहे–अनचाहे रूप से शब्द का धीरे–धीरे ध्वनि परिवर्तन होता गया। प्राचीन काल में जब विदेशी आक्रान्तओं को गुर्शर्स ने पराजित किया तो लोगों ने एक मजबूत अर्थ में, 'गुर्शर्स' शब्द का रूपान्तरण गुर्जर (शत्रुओं का विनाशक), में कर दिया। सम्भवतः 'स' या 'श', 'ज' में बदल गया।

पाणिनि काल में योनि सम्बन्ध गोत्रों के रूप में और विद्या सम्बन्ध चरणों के रूप में जातीय संगठन बन रहे थे। इसी कारण जाति की परिभाषा में गौत्र व चरण इन दोनों को सम्मिलित किया गया। रक्त सम्बन्ध व विद्या सम्बन्धों के कारण छोटे–छोटे गिरोहों की अलग–अलग जातियाँ बन गई।

क्षत्रियों में से कई जातियाँ कर्मानुसार या किसी विशेष कला में पारंगत (यंद्ध कला, संगीत कला, वास्तु कला आदि) लोगों का एक समूह कालान्तर में जाति के रूप में वर्ग, 'गुर्जर' कहलाने लगे। आज भी गुर्जर जाति के लोग बाँस की लम्बी लाठी के नीचे लोहे का पोल (गर्ज) लगवाते हैं तथा लाठी से लड़ने में दक्ष हैं। लोक श्रुति के अनुसार पशुपालक होने से ये अपने साथ गुर्ज (एक प्रकार का कुल्हाड़ा) रखते थे, इसलिए इनका नाम गुर्जर (गुर्ज–र) पड़ा।

लोक में यह भी प्रचलित है कि इस शब्द (गुर्जर) का सम्बन्ध 'गो–चारण' 'गऊ चराना' से अद्भूत है, जिसका अर्थ होता है, गाय चराने वाला (गोप, ग्वाला, गोपाला)। गाय चराने वाला अपनी लाठी (शस्त्र) की मजबूती के लिए नीचे लोहे का पोला लगवाता है। आज यह परम्परा 'गुर्जरों' में ही प्रचलित है, अतः उन्हें प्राचीन काल में गोप, ग्वाला व गाय चराने वाला कहा जाता था।

एक लोक कल्पना यह भी है कि गुर्जर अपने पशुओं को गाजर चराते थे, जिससे वे गुर्जर कहलाये। उत्तरी भारत के गुर्जर अपना सम्बन्ध नन्द मिहिर से जोड़ते हैं। यह बात इससे भी प्रमाणित होती है कि–गुर्जरों का कृष्ण सम्प्रदाय से सम्बन्ध था, जिन्होंने मथुरा के कृष्ण सम्प्रदाय को उत्तरी भारत में फैलाया। नन्द मिहिर, जो गोकुल के वासी थे, कृष्ण के पालक पिता थे, वे गुर्जर थे। अहीरों का एक वर्ग, जो गुर्जरों से निकला है, नन्दवंशी व ग्वालवंशी नाम से प्रख्यात हुआ।[5] कालान्तर में द्वारिका में कृष्ण के समय जिस अन्य वंश का प्रचलन हुआ वे यदुवंशी कहलाए।

नन्द गोकुलवासी थी। जहाँ गायों का कुल (बाड़ा) था। गायों का बाहुल्य था। गाय चराया करते थे। इसीलिए उन्हें गोप कहा गया। नन्द को प्रतिवर्ष कंस को कर देना पड़ता था। यह कर कंस के राज्य की भूमि को गोचर रूप में उपयोग करने के सम्बन्ध में हो सकता है।

आधुनिक गुर्जर जाति का महाभारतकाल से ही गायों के साथ निकट का सम्बन्ध माना जा सकता है। 10वीं शताब्दी में बगड़ावत गुर्जर राजवंश प्रसिद्ध रहा है। रानी लक्ष्मी कुमारी चुण्डावत ने देवनारायण महागाथा का सम्पादन किया है तथा उन्होंने गुर्जर बगड़ावत काबरा नामक साँड, कामधेनु, पार्वती तथा नांगाल नाम की उत्तम नस्ल की गायों का जिक्र करते हुए 1444 ग्वालों के होने का संकेत दिया है। इस प्रकार नन्द का गोप (ग्वाला) होना तथा गुर्जरों का गऊ चराना एवं ग्वाला होना चरितार्थ होता है।[6]

यद्यपि अत्यन्त प्राचीन काल के इतिहास में गुर्जर नाम की किसी जाति विशिष्ट का वर्णन उपलब्ध नहीं है, फिर भी हम महाभारतकाल में इस जाति विशिष्ट के अस्तित्व का आकलन कर सकते हैं।[7]

इतिहास के लेखन में परम्पराएँ, कथाएँ एवं लोक गीत आदि ऐतिहासिक सूचना के रूप में महत्वपूर्ण साबित होते हैं और वह भी उन परिस्थितियों में जिस देश का इतिहास इन्हीं रूपों में सुरक्षित रहा हो। जिस देश के प्राचीन लोग आधुनिक इतिहास लेखन के मापदण्डों से अनभिज्ञ रहे हों उस देश में ऐसी परम्परागत सूचनाओं का और अधिक महत्त्व बढ़ जाता है।[8] इसीलिए इतिहासकार ए0एफ0 पार्जीटर ने लिखा है कि ऐतिहासिक साक्ष्यों के पूर्ण अभाव में परम्पराएँ ही ऐतिहासिक साक्ष्यों की सूचना देती हैं। प्रस्तुत दोहा भी राधा द्वारा कवि ने उस समय कहलवाया है जब गोकुल व ब्रज में बचपन गुजार देने के बाद कृष्ण के द्वारिका चले जाने पर राधा कृष्ण का इंतजार कर रही है एवं उनको उलाहना देती हैं–

''गुर्जरी को जीवण ई कोई जीवण है,
इण खातर थनै उडीकूं रे काँन्हा
थारो पंथ निहारू रे कान्ह
आव रे नन्दगाँव का गुवालिया। बेगौ आव,
माखण री मटकी लिया,
ऊभौड़ी उडींकू, बेगौ आव।''

गोपियाँ माता यशोदा को शिकायत करती हुई कहती हैं कि –

''माखण री सोवन मटकी लियाँ
किण बावळी गूजरी रै,
नैण में प्रीत रौ
कंसूमल रंग भरतो होसी।''[9]

प्राचीन भारतीय साहित्य एवं इतिहास में गुर्जर जाति के यश, साहस एवं वीर गाथाओं का प्रचुर वर्णन मिलता है। इसके नामकरण के बारे में आंशिक रूप से मतभेद है। वस्तुतः मूलरूप से यह नाम 'गुर्जर' है, जो कालान्तर में यह ध्वनि उच्चारण की सुविधा के कारण गुर्जर से गूजर बन गया। सभी प्राचीन अभिलेखों, ताम्रपत्रों, समकालीन साहित्य तथा जर्नल्स में 'गुर्जर' शब्द का ही प्रयोग हुआ है, जबकि 19वीं शताब्दी के यूरोपीय लेखकों एवं कुछ भारतीय लेखकों ने भी गुर्जर के स्थान पर 'गूजर' शब्द का प्रयोग किया है।

'गूजर' प्राकृत शब्द है; जबकि गुर्जर संस्कृतनिष्ठ शब्द से अद्भूत है। यह नाम उसी तरह से है, जिस तरह से ब्राह्मण = बामण, कृष्ण = किशन, राजपुत्र = राजपूत आदि। यह भी सम्भावना है कि गुर्जर शब्द को संस्कृत ने ज्यों का त्यों ग्रहण किया हो और अब यह संस्कृतनिष्ठ लगता है।[10] ब्राह्मणकाल के उपरान्त पुराणकाल तक आते–आते भारतीय समाज में वर्ण–व्यवस्था का स्थान जाति प्रथा ने ले लिया था। सामाजिक क्षितिज में अनेक जातियाँ ऊभरीं। कुछ जातियों का वैशिष्ट्य व महत्व इतना व्यापक हुआ कि तत्कालीन साहित्य में भी उनका प्रचुर मात्रा में वर्णन हुआ। इनमें से एक जाति गुर्जर जाति रही है। प्राचीन भारतीय साहित्य में इस जाति के इतिहास की अमूल्य सामग्री उपलब्ध है। यहाँ पुराण की एक कथा प्रस्तुत करना उन मान्यताओं को धराशायी करने के लिए पर्याप्त होगा, जो यह कहते हैं कि 'गुर्जर जाति' विदेशी है।

पद्म पुराण की यह कथा भारत की प्राचीन संस्कृति, धर्म एवं इतिहास की ओर संकेत करती है, साथ ही साथ गुर्जर जाति की पुरातनता का भी प्रमाण प्रस्तुत करती है। एक बार ब्रह्माजी को मृत्यु लोक में यज्ञ करने की इच्छा हुई। ब्रह्माजी ने इन्द्र की सहमति से अजमेर के समीप पवित्र एवं स्वच्छ वातावरणमय स्थान पुष्कर को यज्ञ स्थल के लिए चुना। यज्ञ के समय पत्नी के मौजूद नहीं रहने पर ब्रह्माजी को उपयुक्त कन्या से विवाह कर यज्ञ सम्पन्न कराने की सलाह दी गई। इन्द्र द्वारा गायत्री नाम की गोप (गुर्जर) कन्या प्रस्तुत की गयी। तदोपरान्त ब्रह्माजी ने गान्धर्व विधि से विवाह का यज्ञ सम्पन्न करवाया। यज्ञ की स्मृति में वहाँ ब्रह्मा के मन्दिर के साथ गायत्री का मन्दिर भी बना हुआ है।[11] पुष्कर का क्षेत्र विशेष रूप से गुर्जर बाहुल्य क्षेत्र है। पी0वी0 काणे ने इस क्षेत्र को 'वनस्थल' गुर्जर देश (पुष्कर) कहा है।

जनश्रुति के अनुसार 11वीं शताब्दी के आसपास तक ब्रह्मा व गायत्री के मन्दिरों की पूजा के लिए 'गुर्जर' ही नियुक्त किये जाते रहे थे। एक बार ब्राह्मण संन्यासी मण्डल ने रात्रि में सोते हुए गुर्जर पुजारियों की हत्या करके इस तीर्थ पर पूजा करने का अधिकार बना लिया था, तब से पूजारी ब्राह्मण ही चले आ रहे हैं।[12]

पुष्कर गुर्जरों का ऐतिहासिक एवं धार्मिक तीर्थ है, जिसका पौराणिक वर्णन एवं महत्व इस जाति की प्राचीनता को प्रमाणित करने के लिए पर्याप्त है।

ह्वेनसांग ने 'गुर्जरों' को क्षत्रिय वंशी कहा है।[13] वास्तव में गुर्जर वैदिककालीन आर्याराजन्य (क्षत्रिय) समूह का राजपूतों के समान उपविभाग है, जिनके ऋषि गोत्र, कुल वंश परम्परा उन्हीं के समान हैं। छठी शताब्दी के पंचतन्त्र एवं तमिल काव्य मणि मेखलै में प्राप्त गुर्जर शब्द के उल्लेख से स्पष्ट है कि इस समय तक आर्यावर्त तथा दक्षिणापथ में बस चुके थे। ये प्रारम्भ में स्वयं को द्विजों से जोड़ते रहे हैं, किन्तु साधारणतः इन्हें क्षत्रिय के रूप में सम्बोधित किया गया। रूद्रदामन के गिरनार अभिलेख (150 ई.) में उल्लेख है कि रूद्रदामन ने यौधेयों को पराजित किया जिसने क्षत्रियों में वीर पदवी धारण कर रखी थी। सभी छत्तीस कुलीन परिवारों की सूचियों में गुर्जर का वीर पदवी के साथ उल्लेख हुआ है। इस प्रकार यह प्रमाणित होता है कि प्रथम शताब्दी ई0 के आसपास 'वीर पदवी' को धारण करना गुर्जर देश के शासकों में एक परम्परा बन गयी थी।

अलबरूनी ने भी अपने वृत्तान्त में इस बात का उल्लेख किया है कि इसमें कोई शक नहीं कि भारत में गुर्जर राजवंश शासकों के समय दर्शनशास्त्र, गणित एवं विज्ञान का उच्च स्तरीय विकास हो चुका था तथा साम्राज्य के विनाश व पतन से पहले स्वर्ग का सा वातावरण था। गुर्जर उच्च सुसंस्कृतीय लोग तथा क्षत्रियों के उच्च वंशज थे।

हर्ष के पतन के बाद उत्तरी भारत में राजनैतिक उथल–पुथल का इतिहास प्रारम्भ होता है। किसी शक्तिशाली सत्ता के अभाव में राष्ट्रकूटों, पालों व प्रतिहारों में सार्वभौम सत्ता स्थापित करने हेतु आपस में संघर्ष करने लगे। इस कठिन संघर्ष में श्रेष्ठता और कुशल नेतृत्व के कारण गुर्जर–प्रतिहार सफल हुये तथा नागभट्ट प्रथम के वंशज नागभट्ट द्वितीय के नेतृत्व में कन्नौज में प्रतिहार वंश के नवीन साम्राज्य की स्थापना हुई।

गुर्जर–प्रतिहार वंशीय शासक कौन थे? इसे एक विवादास्पद विषय में सम्मिलित किया गया है। भारतीय इतिहासकार डॉ0 डी0आर0 भण्डारकर ने चौहानों की उत्पत्ति विदेशी रक्त से माना है; जो गुर्जर जाति के थे। चूँकि प्रतिहार गुर्जर कहे गये हैं, अतः ये विदेशी जातियाँ हैं। गुर्जरों को भण्डारकर मूलतः खजर जाति से जोड़ते हैं जो हूणों के साथ भारत आये। किन्तु उनका यह तर्क आधारहीन है। हूण आक्रमणकारियों के साथ खज़र नामक कोई जाति भारत में आयी थी अथवा नहीं, इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता।

जिन पाश्चात्य विद्वानों ने राजशक्ति, गुर्जरों को विदेशी जातियों में से बतलाया है, वहीं दूसरी ओर उपलब्ध साक्ष्यों व प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट लगता है कि गुर्जर जाति न केवल प्राचीन भारतीय क्षत्रिय वर्ग से उद्भूत है, वरन् वह कार्य जाति की वंशज भी है। सी0वी0 वैद्य महोदय डॉ0 भण्डारकर द्वारा प्रस्तुत गुर्जर प्रतिहार उत्पत्ति के सिद्धान्त का खण्डन करते हैं और कहते हैं कि, गुर्जर सावले रंग, लम्बे कद और सुन्दर बनावट के थे और खजर मंगोलो की तरह काले होते थे। गुर्जरों के नाक की बनावट आर्यो की तरह होती थी।

गुर्जर–प्रतिहारों को विदेशी सिद्ध करने के लिए चन्दरबरदाई कृत पृथ्वीराज रासो की अग्निकुल कथा का आधार लिया जाता है। पाश्चात्य विद्वानों ने इस कथा का यह अर्थ लगाया है कि प्रतिहार विदेशी थे तथा इन्हें अग्नि संस्कार द्वारा शुद्ध किया गया, परन्तु यह मत संदिग्ध है। क्योंकि गुर्जर शब्द प्राचीन है, जबकि प्रतिहार शब्द कालान्तर में अग्निकुल से उद्भूत बताया गया है। वस्तुतः प्रतिहार पद सूचक है।

श्री सी0वी0 वैद्य, औझा एवं ए0सी0 बनर्जी ने उपरोक्त मतों का सविस्तार खण्डन करते हुए प्रतिहारों को आर्यों की सन्तान माना है। ग्वालियर अभिलेख में प्रतिहारों को राम के भाई लक्ष्मण की संतान बनाया गया है।

भगवतशरण उपाध्याय के अनुसार, भारतीय संस्कृति के विवरण में आभीर (अहीर) और गुर्जरों (गूजर, बड़गूजर) के योग का साक्षीकरण कम हुआ है। पतंजलि ने अपने निवास पेशावर जिले के सिन्धु देश में था। गुर्जर उनके पूर्वी पड़ौसी थे। सम्भवतः उन्हीं के सम्बन्ध से पंजाब के जिलों व स्थानों के गुजरात व गुजराँवाला जैसे नाम पड़े थे। ये दोनों साथ–साथ पूर्वी भारत में फैले, पर उनका विस्तृत प्रसार पश्चिमी भारत में हुआ। गुर्जर, गूजर एवं बड़गूजर फिर उत्तर प्रदेश के पश्चिमी भागों में बड़ी संख्या में बस गये, जैसे वे आज भी बसे हुए हैं। पर अधिकतर वे दक्षिण चले गये और लाट में बसकर उसे अपना नाम देकर नये नाम गुजरात (गुर्जरात्रा) से प्रसिद्ध किया। कालान्तर में गुर्जरों ने अपना प्राधान्य स्थापित कर लिया था। 7वीं सदी के बाण ने अपने हर्ष चरित्र में प्रभाकर वर्धन द्वारा इनकी विजय का उल्लेख किया है (गुर्जर प्रजागर)। हर्ष के बाद राजस्थान में वे विशेष प्रबल हो गये तथा तदोपरान्त अवन्ति (मालवा) पर अधिकार कर लिया। उन्होंने कन्नौज पर भी अधिकार किया और मध्य देश के एक बड़े भाग पर गुर्जर–प्रतिहार नाम से अपना साम्राज्य स्थापित किया। इसका उल्लेख ई0बी0 हॉवेल भी करते हैं। गुर्जर–प्रतिहार भारतीय मूल के निवासी थी। आबू के पास उनका क्षेत्र था। गुर्जरों के शक्तिशाली हो जाने के कारण उनका क्षेत्र गुर्जरत्रा कहलाया। कन्नौज के प्रतिहार इन्हीं गुर्जरों की सन्तान थे। साहसी व पराक्रमी होने के कारण इन्होंने अपना विस्तार आबू पर्वत के उत्तर में स्वात तक तथा दक्षिण–पश्चिम में भड़ौच और काठियावाड़ तक किया। इसी वंश के मंडोर तथा कान्यकुब्ज शाखा के शासक उत्तर भारत में दीर्घकाल तक शासन करते हुए यहाँ की राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते रहे।[14]

यह निश्चित है कि क्षत्रिय वंशों के महत्व के कारण अपने वंशों को अलग–अलग नाम से प्रसिद्धि का क्रम इतिहास में कभी भी बन्द नहीं हुआ। दिल्ली के चारों ओर की गुर्जरों की आबादी उस समय की है, जब मुस्लिम आक्रान्तओं ने इन प्रदेशों को रौंदकर नष्ट कर दिया था। दूसरी जातियों के गाँव के गाँव खाली होते चले गये। सतियों की समाधि, भग्न खण्डहरों के अवशेष और प्राचीन नाम साक्षी हैं कि यहाँ पर अन्य जातियाँ भी बसती थीं।

सन्दर्भ सूची

1. मजूमदार, रेसेज़ एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया, पृ0सं0–294
2. देव, राधाकान्त रचित शब्द कल्पद्रुम, शकाब्दा 1181, खण्ड–2, पृ0सं–341 में गुर्जर देश की उत्पत्ति निम्न प्रकार प्रदर्शित की है–गर् = शत्रु उज्जरयति = नष्ट कर देने वाला। इसी प्रकार 'गुरू' + जृ + णिच + अच अर्थात् यह जाति वीरता की प्रतीक है।
3. महतो, पं0 मोहनलाल–जातककालीन भारतीय संस्कृति, पृ0सं0–10, प्राचीन चरित्र कोश, द्वारा, विदेश्वर शास्त्री चित्राव, 1964, पूना।
4. देव, वही, पृ0सं0–352
5. गहलोत, रघुवीर सिंह–राजस्थान का इतिहास, पृ0सं0–16; श्यामसुन्दर दास, हिन्दी शब्दसागर, पृ0सं0–1312
6. चूण्डावत, रानी लक्ष्मी कुमार–बगड़ावत देवनारायण महागाथा, पृ0सं0–9
7. ब्रिग्ले, ए.एच.–हिस्ट्री, कास्ट एण्ड कल्चर ऑफ जाट्स एण्ड गुर्जर्स, पृ0सं0–4
8. जानि नन्द वसुदेव मिताई, दीन्ही गोकुल वास पठायी 'नन्दगोप' राखी सन्मानी, मानी भगिनि सदृश नन्दरानी (मिश्र, द्वारका प्रसाद, कृष्णायन, दिल्ली, 1964, पृ0सं0–11)
9. दीक्षित, श्याम सुन्दर (सम्पा.)–काव्यमाधुरी, पृ0सं0–69, पद 12वाँ
10. जोशी, सत्यप्रकाश–'राधा' अध्याय' माखण', पृ0सं0–14
11. ब्रिग्ले, वही, पृ0सं0 20–24
12. वर्मा, एम0एस0–देश विदेश में गुर्जर क्या है? और क्या थे?, अखिल भारतीय गुर्जर समाज समिति, दिल्ली, 1984, पृ0सं0 30–45
13. ह्वेनसांग का भारत भ्रमण, पृ0सं0 633–634, वैद्य, सी0वी0 मेडिकल हिन्दू इण्डिया, भाग–1, पृ0सं0–651; पुरी, बी0एन0–दि हिस्ट्री ऑफ दि गुर्जर–प्रतिहार, पृ0सं0–2
14. वर्मा, वही, पृ0सं0 30–32